

धुआँ

Page No.

Date : / / 20

रक्त रक्त में जो व्यक्त तेरा आक्रोश है,
इन उबलती रगों में जो भरा ये जोश है।
संच और स्वप्न की कशमकश में डूबा,
खुद से कुछ क्या स्वयं तुझे होश है।

धुएँ की जो धुन्ध है,
तू ही आँखें मँड़ है।
मौत के इस चूर्ण में तू चूर है।
कल्पना से उठ के देख सच्चाई कितनी
दूर है।

लत को छोड़ हाथ याग,
बच ले तू जायेगा मर संकल्प पूर्ण है।
मौत खूबसूरत है ये तसल्लुर है,
अन्त के इस मार्ग पे बस तू ही रुक
रह है।
बस तू ही रुक रह है।